डा० किरण माला

एसोशिएट प्रोफेसर संस्कृत विभाग

मगध महिला कॉलेज पटना

कारक प्रकरण

बी॰ ए॰ स्नातक पार्ट-2

पेपर 3

पाठ-2

कारण कारक (तृतीया विभक्ति)

साधकतमं करणं - किसी क्रिया के सम्पादन मे सबसे अधिक सहायक हो उसे कारण कारक कहते हैं।

उदा ० - राम : बाणेन रावणम् हत :।

कर्तृकरणयोस्तृतिया - अनुक्त कर्ता मे या कर्म वाच्य मे कर्ता और कारण मे तृतीया विभक्ति होती है।

उदा॰

- **मया** लेख : लिख्यते ।
- राम : बाणेन रावणम् हत :।
- रामेण बाणेन रावणम् हत :।

अपवर्गे तृतीया- अपवर्ग अर्थात किसी क्रिया की फल प्राप्ति होने पर लगातार अर्थ मे कालवाचक एवं मार्ग वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है।

उदा॰ -

- देव: मासेन वेदम् अधीते ।
- योजनेन स कथा समाप्तवान्।

<u>सहयुक्तेऽप्रधाने {सहार्थे तृतीया</u> }-सह अर्थात साथ अर्थ वाले शब्दों के योग मे अप्रधान कर्ता मे तृतीया विभक्ति होती है ।

उदा॰ -

- पिता <u>पुत्रेण सह</u> आगत : ।
- माता <u>पुत्रया सार्धम्</u> गाता ।
- <u>त्वया सह</u> अहं गमिष्यमी।

<u>येनाङ्गविकार :</u> जिस अङ्ग के दोष युक्त होने से प्राणी का विकार ज्ञात हो उस अङ्ग वाचक शब्द मे तृतीया विभक्ति होती है ।

उदा॰

- मोहन: <u>अक्ष्णा</u> काण : अस्ति ।
- स पृष्ठे<u>ण</u> कुब्ज : ।
- देव : <u>कर्नेण</u> बधिर :।

<u>इत्थम्भूतलक्षणे</u>- जिस चिन्ह या लक्षण विशेष के द्वारा किसी की विशेषता या पहचान सूचित हो उस चिन्ह वाचक शब्द मे तृतीया विभक्ति होती है ।

<u>उदा ॰</u>

- असौ <u>जटाभि</u> : तापस :ज्ञायते ।
- स: <u>शस्त्रेण</u> योद्धा प्रतीयते ।

<u>हेतौ</u> - हेतु अथवा कारण बोधक शब्दों मे तृतीया विभक्ति होती है।

उदा॰

- <u>श्रमेण</u> विद्या भवति ।
- <u>दण्डेण</u> घट : निर्मित :।

<u>ऊनवारणप्रयोजनार्थेषु तृतीया-</u> ऊन (हीन),वारण (रोकना),एवं प्रयोजन (कार्य ,अर्थ,गुण आदि)अर्थ वाले शब्दों के योग मे तृतीया विभक्ति होता है।

उदा ॰

ऊनार्थक-

- धनेन हीन :।
- क्रोधेन रहित:।

वारनार्थक-

- अलं श्रमेण ।
- अलं विवादेन ।

प्रयोजनार्थक-

- धनेन किम प्रयोजनम्।
- को लाभ : शठेन मित्रेण ।

.....